रिकॉर्ड:- तुम्हें पाकर हमनें..... ओम शान्ती प्रातःक्लास 2-1-1967

मीठे-2रूहानी बच्चों ने गीत सुना।सभी अपनें 84जन्मों की हिस्ट्री जाग्राफी फिर स्मृती में आई।जानते हो हम अभी बाप से वर्सा ले रहे हैं फिर से।यह हिस्ट्री जाग्राफी किसीको भी समझानी बहुत सहज है।ल.न्.का चित्र तो सामनें है।प्रदर्शनी में भी पहले-2यह चित्र होता है।मन्दिर भी ल.न्.के बहुत बनाते हैं।इन मन्दिर बनानें वालों को भी तुम लिख सकते हो कि इन ल.न.के 84जन्मों की कहानी क्या है?कैसे इन्होंनें राज्य पाया?फिर कैसे गुमाया?यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैसे रिपीट होती है?कैसे नई से पुरानी,पुरानी से नई होती है।कैसे फिर से इनका राज्य स्थापना हो रहा है।आकर समझो।या हम ही आकर आपको समझावें।बाबा नें कितनें बार कहा है मन्दिर बनानें वालों से जाकर पूछो।उनको समझाओ।यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी जाननी तो बहुत जरूरी है।तुम नालेज फुल बन जावेंगें।इसमें खर्चे की बात नही है।बुधी में फुल नालेज आनें से फुल वर्ल्ड की राजाई मिल जावेगी।सतयुग के पहले नम्बर में है यह ल.न्.।बचपन में यह राधा कृष्ण।इन्होंनें यह राजाई कैसे ली?फिर वे राजाई कैसे चली गई?किसनें दी फिर किसनें ली?फिर कौन देते हैं?ऐसे-2विचार सागर मथन कर प्रदर्शनी में भी यह समझाना है।फिर से वो ही राज योग कैसे पा रहे हैं।यह तो बहुत सहज है।भगवानोवाच्य मामेकम याद करो।बाप को याद करनें से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगें।जैसे बाप बैठ समझाते हैं वैसे बच्चों को भी समझाना है।बाप नें कहा है मेरे भक्तों को सुनाओ।एक है शिव की भक्ति,दूसरी है ल.न्.की भक्ति।मुख्य यह है।वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी ल.न.की ही बतावेंगें शिव की तो नही कहेंगें।शिव बाबा इन ल.न्.के 84जन्मों की हिस्ट्री जाग्राफी बैठ सुनाते हैं।हिस्ट्री जाग्राफी होती ही है जो राज्य लेते हैं और गुमाते हैं।यह,विश्व के मालिक कैसे बनें फिर राजाई गंवाई कैसे?और कोई को बताना आवेगा ही नही।तो बच्चों को प्रदर्शनी में भी इस पर अच्छी रीत समझाना चाहियें।भारत को ही बाप हक देते हैं।शिव बाबा की जयन्ती भी भारत में ही मानाते हैं।वो है क्रिश्चियनस की डायेनेस्टी;यह है सूर्य वंशी देवी देवताओं की डायेनेस्टी।देवतायें होते ही हैं सतयुग में।आधा कल्प इन्होंने ही का राज चलता है।मनुष्यों को कुछ भी पता नही।इनको समझानें वाले तुम ठहरे।यह नालेज तुमको अभी मिलती है।यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी बच्चों की बुधी में रहनी चाहियें।अभी तुम कहेंगें हमको अपने84जन्मों की स्मृती आई।बुधी में फिरता रहना चाहियें।इन ल.न्.के चित्र पर बहुत अटेन्शन देना चाहियें।इसके बाजू में सीढ़ी हो।बड़े-2चित्र हाल में अच्छे शोभते हैं।छोटे चित्रों को डबल-2कर बनाया जावे तो सब बड़े हो जावें।अन्दर में आना चाहियें कैसे हम औरों को समझावें।बच्चों को स्कूलों में भी यह सिखाया जाता है।हिस्ट्रीजाग्राफी के रूप में यह नालेज बताओ?तुम भी स्टूडेन्ट हो ना।बाप बताते हैं आज से 5000वर्ष पहले भारत स्वर्ग था देवी देवताओं का राज्य था।फिर इनको पुनर्जन्म तो लेना ही है।84जन्म कैसे-2लिये।पहले पावन थे,फिर पतित बनने से राजाई गवां दी।इसमें लड़ाई की कोई बात नही।ना लड़ाई से राज्य लेते हैं ना लड़ाई से गवाते हैं।यह तो 84जन्मों का खेल बना हुआ है।तुम एक्टर्स हो ना।तुम ड्रामा को अच्छी रीत जानते हो इसलिये तुमको खुशी होती है।हमारा इस ड्रामा में सबसे ऊंचपार्ट है।महावीरता दिखाते हैं ना।हनुमान को महावीर कहते हैं।अभी हनुमान नाम कोई बन्दर का है नही।यह तो मनुष्यों नें क्या-2नाम रख दिये हैं।यह बड़ी पेचिली बातें हैं समझानें की।तुम जानते हो हम बन्दर मिसल थे।फिर हमारे द्वारा ही बाप आकर विश्व को इस रावण से छुड़ाते हैं।इस ज्ञान से पहले क्योंकर हम बन्दर से भी बदतर थे।बुधी में फील होता है माया नें क्या-2 बना दिया था।कैसा वण्डर है।परन्तु हम भी ड्रामा के वश हैं।ड्रामा में पार्ट है।सारा दिन बुधी में यह नालेज फिरती रहनी चाहियें।हम जो पुरुषार्थ करते हैं वो भी ड्रामा अनुसार करना ही है।कल्प पहले भी किया था।यह ड्रामा का राज भी बड़ा पेचिला है।नही तो कईयों का ड्रामा की बात से माथा खराब हो जाता है।ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ करेंगें।फिर समझा जावे इन का ड्रामा में पार्ट ही नही है।साखी हो देखते हो।फेल होगा। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा।ऐसे कोई विकार में जाते रहे और कहें ड्रामा में ही ऐसा है

वो तो जानवरमिसल ठहरे। यह वुधी सें समझने की वातें है। वाप कहतें हैं देही अभिमानी वनो। कोई भी देह धरी सें तैलक नही। हमको तो एक वाप को ही याद करना है। अभी है संगम। वाप जरूर संगम पर ही आवेंगें। पुरानो दुनिया को ही पतित दुनिया कहा जाता है। मुख्य वात है पवित्र वनने की। कुछ भी हो जायें नगें नही होना है। इसका मतलव यह भी नहीं कि आपस में लटकना है। नाम रूप में फंस जाना है। आशिक माशूक कव आपस में लटकते नही है सिर्फ एक दो को देख कर खुश होते हैं। वाकी लटकना आद कुछ भी नही होता है। लटकने वालें में काम विकार का भी अंश आ जाता है। जो नाम रूप में फँस कर लटकते हैं वो और ही नुकसान कर देता है। वो आशिक माशूक कव विकार में नही जाते है। यहां तो माया ऐसी चंचल है जो फीमेलस आपस में भी एक दो साथ लटक पड़ती है। यह वड़ा कड़ा रोग है नाम रूप में फंसने का। जव तक एक दो को भाकी नां पहनेंगें, गोद में नां जावेंगें, तव तक नींद नही आवेगी। भाकी पहनने विगर जैसे कि प्राण जाते है। यह है माया। अनेक प्रकार के सटके माया मार देती है। तुम वच्चों की तो वुधी में आना चाहिये यह पुराना किचड़ा है। इस में क्या आसक्ति रखनी है। कोई की भी देह में नां फंसना है। एक वाप को याद करना है। यह मंजिल वहुत भारी है। विश्व का मालिक वनना है। सो भी कैसे सहज वनते हैं। भारत का प्राचीन राजयोग कहते भी है परन्तु इससे क्या हुआ, यह कोई समझ नही सकते। तुम समझाते हो योग वल सें, हम विश्व के मालिक वनते हैं। इसमें लड़ाई की कोई वात ही नही। पाण्डवों नें कौरव राज्य लिया परन्तु सुप्रीम पण्डे साथ योग लगाया तव विकर्म विनाश हुयें। और दुसरे जन्म में राजाई पद पाया। यह है ही प्रिन्स प्रिन्सेज वनने की मिशन। जैसे वो राम कृष्ण की मिशन है। वो भी सन्यासी है। तुम्हारी यह है ईश्वरिय मिशन मनुष्य जो पतित वन गये है उनको श्रीमत पर पावन वनाने की। कहते भी हैं हे पतित पावन आओं। आकर ~~पावन वनाओं। इसको कहा जाता है पतित को पावन वनाने का ईश्वरिय मशिनरी। पावन वन कर कुल~~ सव मूल वतन चले जावेंगें। फिर सतयुग में राजाई कहां सें आवेगी। पावन दुनिया में राजाई भी चाहिये नां। इसको कहा ही जाता है भारत का प्राचीन राजयोग। जो वाप ही आकर सिखाते हैं। उनको ही वाप टीचर गुरू कहा जाता है। यह वुधी में रहने सें भी तुमको खुशी वहुत रहेगी। माया के तूफान तो अन्त तक आवेंगें। कर्मातीत अवस्था को अभी कोई पा नही सकते। कुछ नां कुछ हिसाव किताव रहता ही है जो भोगते रहेंगें। लड़ाई आद की आपदें भी आनी है। तैयारी होती जा रही है। रिहर्सल होती रहेगी। आगे भी लड़ाई लगी तो यज्ञ रचे थे। समझा था यह महाभारत लड़ाई है। अच्छा महाभारत लड़ाई के वाद क्या हुआ यह कुछ भी पता नही है। तुम अभी जानते हो विनाश तो होनाही है। परन्तु अभी तक हमारी राजधानी ही स्थापन नहीहुई है। अभी तो देश देशान्तर पैगाम कहां पहुचाया है। इसकें लिये युक्तीं निकालनी चाहियें। यह प्रदर्शनी तो सव तरफ ले जानी पड़े। फिर परदर्शनी के भी इतने सेट चाहियें नां। कोई कारीगर निकले जो कपड़े पर ऐसा अच्छा वनावे जो झट लपेट कर कहीं भी ले जावें आये सकें। 6x4 के हो। जैसे विस्तरा होता है वैसे लपेट कर, 6 फुट का विस्तरा वनाने में हर्जा नही है। वावा यह देहली वोम्वे, वैंगलोर आद के वच्चों को डायरेक्शन देते है। ऐसे-2 चित्र वनाओं यह सारी सर्विस करनी की मिशन चाहिये। कोई कर दिखावे फिर वावा वहुत तरफ भेज सकते हैं। भेजेंगें भी सर्विस एवुल को। जो सयाना हो। दिल पर चढ़ा हुआ हो। सेन्टर खोल वहुतों को सुख देंगें। वाकी नाम रूप में फंसनें वालें क्या सर्विस करेंगें। ऐसे भी है औरों की सर्विस करतें है, अपनी करते नही। दूसरा ऊंच पदे, ज्ञान देने वाले खुद नीचें हो जावें। यह भी वण्डर है नां। आत्मअभिमानी वनते नही है। वेहद का सन्यास चाहिये दिल सें तुम वच्चे जानते हो यह पुरानी दुनिया खतम होनी है। फिर भी गृहस्थ व्यवहार में रहते तोड़ निभाना है। राजाई लेने में मेहनत है। हर एक वात में सैक्रीफिकेशन हो। मंजिल वड़ी ऊंच है। जो अच्छे-2 वच्चे सर्विस में तत्पर रहते है। उनका सारा दिन ख्यालात चलता रहेगा। कैसे प्रदर्शनी में समझावें। प्रदर्शनी के मुख्य जो चित्र है सो तो वनते ही रहने चाहिये। कपड़े पर फर जावें एक जो सवकी ही अच्छा है। उस पर ही ऐसे वनावे ..

जो कपड़ा खराब ना हो। हमारा काम है ज्ञान से। खूब सुती की दरकार नही है। यह प्रदर्शनी में बिजली आद का शो करते है मनुष्य आवें। हमारे ज्ञान का इन विजलियाँ आद से कनेक्शन नही है। हमारा ज्ञान तो है शान्ती का। हिस्ट्री जाग्राफी आकर कोई समझें। स्कूल में कोई विजली आद का शो होता है क्या? इसमें डेकुरेशन की कोई दरकार नही। यह तो नालेज है। परन्तु आज कल के मनुष्य है यह चटा पर। आगे चल कर तुमको बहुत निमन्त्रण मिलेगें कि हमको आकर समझाओ। सीढ़ी का चित्र, त्रिमूर्ती, गोला, ल न् का चित्र यह मुख्य-2 जो है यह 6x4 का तो जरूर करो। यह सेट तो बनते ही जावें। बहुत सर्विस करनी है। इतना सारा भारत भरा हुआ है। घर-2 में पैगाम पहुँचाना है। हो सकता है अखबारों में भी हमारे चित्र पड़ जावें। कोई की बुद्धी में बैठ जावें। आर्टीफिशल भी बहुत निकलेगें। चित्रों की कापी कर रखेंगे पैसे कमाने लिये। परन्तु नालेज तो समझायें नां सकें। बच्चों का सर्विस तरफ सारा दिन विचार चलना चाहिये। बाप से बेहद का वर्सा मिलता है तो मेहनत भी करनी चाहिये। बाप धर्म की स्थापना कर रहे हैं। बाकी सब आत्मायें अपने-2 मकान में चली जावेंगी। राजधानी स्थापन हो जावेगी। झाड़ में भी तुम समझाते हो। तुम हो ही सन्यासी धर्म के। तुमको राजयोग तो सीखना ही नही। फिर माथा मारने की क्या दरकार है। आगे चल कर कोई सन्यासी भी निकलेंगे। यह भी नूंध है। तो बच्चों को शौक होना चाहिये समझाने का। बैचलर्स जो है उनके ऊपर तो कोई बोझा नही है। गृहस्थियों को तो बच्चों आद की पालना करनी होती है। नही तो उनको कौन सम्भालेगा? बाकी वानप्रस्थी है, अथवा कुमारियां है उन पर कोई बोझा नही। जवान बच्चे भी मुश्किल ठहर सकते है। माताओं में धैर्य जास्ती होता है। पुकारती भी मातायें है। पुरुष निलिज्ज होते है। माताओं में लज्जा होती है। इसलिये पुकारती भी है कि नंगा होने से बचाओ। कितना दुख सहन करती है। कन्याओं का सौभाग्य जास्ती है। कुमारी अगर पवित्र रहना चाहती है तो माता पिता भी कुछ कर नही सकते है। परन्तु सिर्फ हिम्मत चाहिये। समझाने की। जितनी छोटी कुमारी उतना नाम बाला करेगी। जो युगल गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहते है उनका भी नाम गायन होता है। बाप का हुक्म है गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। फिर आप समान बनाना है। सेवा तो करनी है ना। भारत की सच्ची रूहानी सेवा तुम करते हो। पतित को पावन बनाने का रस्ता तुम बताते हो। तुम कह सकते हो हम राम राज्य स्थापन करने पवित्र बनते है श्रीमत पर। भगवानोवाच्य काम महाशत्रु है। हम भगवान उस निराकार को मानते है। बाकी यह शास्त्र आद तो सब भक्ति मार्ग के है। इनमें कोई ज्ञान ही नही। ज्ञान का सागर पतित पावन सदगती दाता एक ही बाप है। यह शास्त्र आद सब हमारे सुने हुये है। परन्तु बाप कहते है यह सब भक्ति मार्ग के है। भक्त बुलाते है कि आकर सदगती करो। भक्ति का फल दो। या दुख से छुड़ाओ। दुख तो बहुत है ना। सुख धाम में ऐसी बातें होती नही। यह है दुख धाम। कांटों का जंगल। कितने बड़े-2 जंगल है। जंगल में जंगली जानवरों मिसल मनुष्य रहते है। स्वर्ग को कहा जाता है फूलों का बगीचा। वो लोग बड़े-2 दिनों पर खुशी मनाते है। तुम तो रोज खुशी में रहते हो। तुमको खजाना मिल रहा है। तुम विश्व की बादशाही प्राप्ती करने लिये गुप्त पुरूषार्थ कर रहे हो। हो। तदबीर तो बहुत कराते रहते है परन्तु किसीकी तकदीर में भी तो हो ना। ब्राह्मण कुल भूषणों में कोई छुपा नही रह सकता। कौन अच्छा पुरूषार्थ करते, बहुतों को रस्ता बताते है तुम देखते रहेंगे। दिन प्रति दिन किसीको समझाना भी सहज हो जावेगा। सिर्फ आत्मा का ज्ञान भी तुम किसीको बैठ सुनाओं तो सुनकर बहुत खुश होगें। दुनिया में तो कोई नही जो आत्मा का ज्ञान दे सकें। आत्मा क्या है, कैसे इनमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह अभी तुम्हारी बुद्धी में है। यह पार्ट अविनाशी है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करने में ही मेहनत है। बड़ी महीन बात है। हम आत्मा का बाप भी आत्मा है। उसका भी पार्ट भरा हुआ है। यह हिस्ट्री जाग्राफी भारत की ही है। बाकी जो बाद में आते है उनकी हिस्ट्री जाग्राफी तो क्लीयर है। तुम अभी समझते हो हमने कैसे राज्य गंवाया है। फिर लेते है। बाकी बीच में है बादशाहत। यह हिस्ट्री जाग्राफी किसीको समझाते रहेंगे तो भी बहुत खुशी में रहेंगे। अच्छा ओम